वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

फरवरी – 2019

* अपनी उपलब्धियाँ को जताने से बचो
* अहं के अधिकार के महा भयानक फल
* देव ज्योति और देव तेज के करिश्में
* जीवन की सफलता
* मूर्तियों और मन्दिरों के आडम्बर
* सब माताओं की याद में
* शुभ संग्राम

अहं के घटाने के साधन

इस सम्बन्ध में श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने इस तरह लिखा है:-

(1) सालों साल तक अपने झूठे बर्तन आप साफ करने और अपने कमरे में आप झाड़ू देने के साधन करता रहा हूँ।

(2) अपनी कमियों और अपराधों को सामने लाकर अपनी बेहद नीच और घृणित तस्वीर के विषय में बरसों तक लिखने का साधन करता रहा हूँ (यह साधन अब तक भी जारी है।)

(3) भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में अपनी अहं मूलक नीच गतियों को सामने लाकर अपनी निहायत शर्मनाक छवि के सम्बन्ध में लिखने का साधन बरसों करता रहा हूँ।

(4) दूसरों के मामले में अनुचित तौर पर दख़ल देने और अगर कोई बात अपने-आप को आती हो तो दूसरों पर उसे बेवक्त व बेमौके प्रकट करने में अपने आप को रोकने का साधन करता रहा हूँ।

(5) सालों-साल तक हर रोज सुबह बहुत जल्दी अपने साथी काम करने वालों के दरवाज़ों पर पहुँच कर और ज़मीन पर सिर रखकर उन्हें प्रणाम करता रहा हूँ।

ऐसा करने से मुझे बहुत फायदा हुआ है मेरा अहं घटा है और मैं अपनी कमियों, हानिकारक गतियों और अपनी अवज्ञाओं व अपराधों के विषय में अपने से बड़ो की तरफ से बताए जाने पर उन्हें शान्ति पूर्वक सुनने, उन पर विचार करने और बहुत बड़ी हद तक उनका बोध हासिल करने के लायक हुआ हूँ। यहाँ तक कि बहुत बार अपने से छोटों के सम्बन्ध में भी अपनी ज़्यादतियों को अपने आप देखने और उन्हें महसूस करके उनसे मोक्ष पाने के साधन करता रहा हूँ।

देवात्मा फरमाते हैं

* घमंड के वश में होकर इन्सान अपनी झूठमूठ बहुत अधिक कीमत लगाता है, अपने आपको बहुत बड़ा समझता हैं जो काम वह नहीं कर सकता, उसे भी करने का दम भरता है।
* अहं अनुरागी जन कभी भी अपने विषय में यह विचार नहीं कर सकता कि मुझमें कौन कौन से आत्मिक रोग हैं?
* अहं अनुरागी के लिए इस दुनिया वा अगली दुनिया में पतन ही पतन है।

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 2
फरवरी – 2019
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

अपनी उपलब्धियाँ को जताने से बचो

सुना गया है कि शेखसादी के साथ एक दिन उनका पोता आग्रह करके प्रभात के 5 बजे के करीब मस्जिद में नमाज पढ़ने चला गया। वह नमाज से वापसी पर अपने से कई बड़ी उम्र तक के सम्बन्धियों को टोकता कोसता आया कि आप लोग घर में सोये रहते हो, नमाज क्यों नहीं पढ़ने जाते? उसकी यह अवस्था देखकर शेखसादी ने उसे आगे के लिए सुबह जगाने और अपने साथ नमाज के लिए ले जाने से मना कर दिया और कहा कि एक ही दिन नमाज पढ़ने से तुम अपने आपको बहुत ही अच्छा और बड़ा देखने लग गये और दूसरों के नुक्स और कमियाँ जताने के लिए तत्पर हो गये। इसलिए तुम्हें नमाज पढ़ने का कोई लाभ नहीं।

ईसा मसीह जी ने फरमाया है कि कोई भला काम इस तरह करो कि जिस हाथ से करो, दूसरे हाथ को भी पता न लगे।

एक पुरानी कहावत चली आई है कि नेकी कर, और दरिया में डाल। सिक्ख साहेबान की बाणी में आता है कि "तीर्थ पुण्य और दान कर मन में करे गुमान, ... सब निष्फल जात हैं ज्यों कुँचर इस्नान।"

उपरोक्त बहुत कीमती वचनों का अभिप्राय ये है कि किसी अच्छे काम का जताना, बताना या ढिढोंरा पीटना अच्छाई के पुण्य को मिटा देता है, उल्टा बुराई दे जाता है।

एक-एक जन दूसरे के साथ बात करते समय अपनी किसी अच्छी क्रिया की बात बड़े जोश और हर्ष से बताता रहता है और दूसरे सुनने वाले को कुछ भी कहने या बोलने का अवसर नहीं देता। उसे तनिक पता तक भी नहीं चलता कि उसने कोई गलत बात की है या दूसरे का कोई अधिकार छीना है या कोई हानि की है या उसकी उपलब्धियाँ उससे कहीं ज़्यादा हैं।

धर्म अभिलाषी जनों को इस अंग में बहुत खबरदार होने और सचेत रहने की जरूरत है और ऐसी प्रक्रिया से बहुत भयभीत होकर हमेशा बचे रहने की फिक्र और कोशिश में रहना चाहिए, नहीं तो जीवन को बहुत बड़ी हानि हो जाने की आशंका हो सकती है।

यह एक अटल और ठोस और पहाड़ जितनी बड़ी सच्चाई है कि हम सब मनुष्य मूल से सुख अनुरागी हैं। सुख अनुरागी होना और स्वार्थी होना, मिथ्याचारी होना व पापी या हानिकारक होना एक ही बात है। अर्थात सुख अनुरागी मनुष्य का गलत जाना और गलत जाकर अपनी और दूसरों की हानि करना लाज़मी बात है।

सुख अनुरागी मनुष्य के लिए स्वभाविक ही है कि उसका ध्यान स्वयं अपनी गलतियों, कमियों, दोषों की तरफ नहीं जाता और वह बड़ी योग्यताएं रखकर, उच्च शिक्षित होकर और कई अच्छे काम करके अपने आप को ठीक ठाक ही समझता रहता है और अपने आप को बहुत अच्छा और निर्दोष इन्सान समझता रहता है। देखा गया है कि एक-एक उच्च शिक्षित और अच्छी क्रियाएँ करने वाले इन्सान भी जब किसी अपने से बड़े और योग्य जन से बरसों बाद मिलने आता है, तब वह सिर्फ अपनी क्रियाओं, सफलताओं और प्राप्तियों को बहुत उत्साह और उच्छवास से भरकर ब्यान करता रहता है और दूसरे जन की कोई बात सुनने तक की जरूरत महसूस नहीं करता। सारी मुलाकात का समय अपनी उपलब्धियों के बताने में ही व्यतीत करके हर्ष से भरकर चला जाता है। वह अक्सर यह चिन्ता या ख्याल तक भी नहीं कर पाता कि उसने कोई हानि की बात भी की है।

हम सुख अनुरागी मनुष्यों को अपनी प्रशंसा या बढ़ाई करने और सुनने में सुख मिलता है। कई बार कितने चतुर लोग दूसरों से अपना कोई अभीष्ट सिद्ध करने के लिए उनकी झूठी या सच्ची प्रशंसा करके अपना मतलब निकाल लेते हैं। सुनने वाले को अपनी प्रशंसा के सुख के अन्धकार में कुछ पता नहीं चलता और प्रशंसा करने वाले को अच्छा और अपना हितैषी देखने लग जाते हैं। मैने स्वयं ऐसी अबोध अवस्था में कई बार चकमा खाया है और चालाक और चतुर जन को अपना स्नेही महसूस किया है और हानि उठाई है, परन्तु बाद में सच्चाई का भेद खुलने पर अपनी अबोधता का पता चला है। अपने प्रशंसकों के सम्बन्ध में भी धर्म अभिलाषी जन को बहुत गंभीरता से और फिक्र से सोचते और देखते रहने की जरूरत है।

प्रशंसा और मान बड़ाई एक भीषण और महा हानिकारक नीच अनुराग है। इसके सुख की जावत जीवन तृप्ति करते-करते मनुष्य इसका अन्य कई नीच अनुरागों की तरह गुलाम और बन्धुआ हो जाता है। बहुत बार वो प्रशंसा पाने के लिए कोई अच्छे काम भी करने लग जाता है।

हमारी सुख अनुरागी प्रवृति बहुत ही भयानक और दूषित है हमें अपना कोई भला काम, कोई सेवा, कोई क्रिया, कोई दान या कोई शुभ-संग्राम करके फूलने, इतराने और अकड़ने से अपना सारा जोर लगाकर भी बचे रहने की बेहद जरूरत है क्योंकि वह हमारे प्रकृत नीच रूप को देखने के लिए ही असमर्थ्य कर देता है और हमें भ्रान्ति में डाले रखता है। जहाँ तक सम्भव हो इससे खबरदार रहने की जरूरत है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने फरमाया है कि जो कुछ मनुष्य असल में प्रकृत रूप में होता है वह कुछ देखने की हालत में (अन्धकार के कारण) नहीं रहता और जो कुछ वह नहीं है वह अपने-आप को देखता रहता है और खुश-प्रसन्न रहता है।

श्रद्धेय पण्डित परमेश्वर दत्त जी ने भी भगवान के श्री चरणों से कुछ अर्सा दूर बाहर के असरों के वातावरण में रहकर ये महसूस किया था कि "मुझे अनुभव होता रहता है, कि यह स्वतन्त्रता मेरे जीवन की नौका को रसातल में पहुँचा देगी। इस अवस्था में रहते-रहते बड़ों के अधीन रहने और उनसे अपने दोषों को सुनने की योग्यता जितनी मुझमें वर्तमान है को खो बैठूँगा। निकम्मे रहते-रहते कामकाज और सेवा करने की और से मेरी तबीयत का झुकाव बिलकुल मिट

जाएगा। केवल सम्मान पाते-पाते अपने अपराधों के लिए अपमान सहने की शक्ति खो बैठूंगा। अपनी नीचता को देखने का काफी अवसर न पाकर मेरा हृदय घमण्ड से भर जाएगा (शायद भर भी गया होगा) और बड़ों की महिमा को देखने, उपबल्ध करने का भाव बिल्कुल खो बैठूँगा।"

अगर एक अनुरागी शिष्य का हृदय इसकी इतनी जरूरत महसूस करता है हम तुच्छ सुख अनुरागी साधारण मनुष्यों को अपनी नीचता देखने की किस कदर ज्यादा जरूरत है, उसका अनुमान लगाया जा सकता है।

कुछ अच्छी प्रकृति वालों को अपने इस महा रोग का किसी अंश पता भी होता है, मगर वह रोग उन पर इतना जोर से हावी हो जाता है कि वह फिर अपने किसी हितैषी की तरफ से बार-बार विनम्र प्रार्थना और ध्यान फेरने पर भी उस महा कोढ़ को देखने से असमर्थ्य हो जाते हैं। वह अपनी अच्छी और भली क्रियाओं को बोलकर या लिखकर या और नाना तरीकों से उसका प्रसारण व प्रचार करके उसे सुन्दर और हितकर रूप में देखने और महसूस करने के लिए विवश रहते हैं। और खुशी-2 अपनी उच्च पूँजी को लुटाते रहते हैं और रोगी, नंग और कंगाल होते जाते हैं।

हमारी महा नीच सुख अनुरागी मनुष्य प्रकृति को जिस कदर अपनी नीचता पर चिन्तन और विचार करने और हर रोज़ यथेष्ट समय देकर उसे लिखने की जरूरत है, उसे पूरा-पूरा बताया जाना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है।

जो अभागे जन देवात्मा के दर से जुड़ने और उनका एक या दूसरे प्रकार से कारज करने का दम्भ भरते हैं और बीसीओं-तीसीओं साल लगातार हर रोज अपनी नीचताओं पर चिन्तन और विचार करने और लिखने का साधन करने से उदासीन रहते हैं वह मोटे पापाचार और मिथ्याचार से बचने और कुछ साधारण अच्छे भावों के पनपने से कुछ शरीफ और अच्छे बनने के अतिरिक्त कोई आगे असल ठोस लाभ प्राप्त नहीं कर पाते। वह न अपने प्रकृत रूप को असल और स्पष्ट रूप में कुछ देख और उपलब्ध कर सकते हैं और न मानसिक समझ के सिवाय देवात्मा के देव रूप के अतिशय महान और अद्वितीय सौन्दर्य के देखने की कुछ सामर्थ्य लाभ कर पाते हैं। देवात्मा के महा अनुपम देव रूप से सम्बन्ध स्थापन करने और उस सम्बन्ध की अमूल्य और महान बरकतों के पाने के महा सौभाग्य तक भी कुछ रसाई पाने के भी अयोग्य रहते हैं।

(बलदेव सिंह)

देवात्मा फरमाते है

धर्म मार्ग पर चलने वालों के रास्तें में मान बड़ाई की शक्ति बहुत भयानक रूप से विघ्न डालतीहै। हमारी नज़रों में वह जन कोई काम का नहीं जो नाम और यश का ही भूखा हो।

जैसे हम खाना इसलिए खाते हैं और पानी इसलिए पीते हैं कि हमें भूख और प्यास लगती है। इसमें किसी की प्रशंसा की आवश्यकता नहीं होती - इसी प्रकार से ही धर्म साधन और धर्म कार्य करने में तुम्हें किसी जन की प्रशंसा के भूखे नहीं रहना चाहिए बल्कि यह सोचना चाहिए कि इसमें हमारा हित है।

अहं के अधिकार के महा भयानक फल

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज फरमाते हैं : सन् 1912 में जब..... भगवान ने कृपा करके बातचीत में अहं के अनुचित अधिकार की महा भयानक तस्वीर ऐसे रोशन रूप में हम सब के सामने प्रकट की कि उसे देखकर मेरे सामने अहं के अनुचित अधिकार के महा भयानक फलों के सम्बन्ध में सचमुच एक नई दुनिया खुल गई मैने देखा कि :-

(1) निश्चय एक-एक जन अहं के अनुचित अधिकार में आकर सिर्फ यही नहीं कि वह किसी नीचता या किसी सम्बन्ध में अपनी किसी हानिकारक गति को आप देखने के अयोग्य बन जाता है बल्कि अगर उसका कोई बड़े से बड़ा हितकारी सम्बन्धी भी इस विषय में उसकी असल तस्वीर उसे दिखाना चाहे तो भी वो उसे देख नहीं सकता।

(2) निश्चय ही एक-एक जन अहं के अनुचित अधिकार में आकर इस दरज़े अन्धा हो जाता है कि केवल यही नहीं कि उसे अपने शिक्षकों ओर गुरुजनों के भीतर कोई ऐसा उच्च आत्मिक अंग दिखाई नहीं देता कि जिसकी प्राप्ति के लिए उसे कोई बकायदा साधन और संग्राम करने की जरूरत हो। बल्कि उसका कोई बड़े से बड़ा हितकारी भी उसके भीतर किसी उच्च अंग की कमी को उसे दिखाना और उसकी प्राप्ति की आवश्यकता उसे बोध कराना चाहे तो भी उसे देखने और उसके लाभ करने की इच्छा करने के अयोगय हो जाता है।

(3) निश्चय अहं के अनुचित अधिकार में आकर एक-एक जन की यहाँ तक किस्मत फूट जाती है कि जिन उच्च बोधधारी सम्बन्धियों के सम्पर्क में आकर उसके हित का बन्द द्वार खुल सकता है, उनके सम्पर्क में आने पर वो जब उसके जीवन के किसी अंग में उसकी किसी गलती व कमी को उस पर प्रकट करते हैं, तब ही वह उनकी ऐसी बात से उनसे दूर चला जाता है और अपने भले का मार्ग आप बन्द करने का काम करता है।

"सचमुच किसी मनुष्य के लिए इससे बढ़कर और क्या घाटे की बात हो सकती है कि उसके वजूद पर गन्दगी लगी हुई हो और वह उसे न अपने आप नजर आती हो और ना किसी के बताने पर दिखाई देती हो। उसे भिन्न-भिन्न भयानक रोग खा रहे हों परन्तु वह न खुद उन्हें पहचानता और उनसे छुटकारा पाने की फिक्र रखता हो और न किसी दूसरे के कहने पर उसकी तरफ ध्यान देता और दे सकता हो और सचमुच किसी मनुष्य की इससे बढ़कर कृपापात्र अवस्था और क्या हो सकती है कि वह नंगा और भूखा, बेसरो-सामान खड़ा हो और किसी के बताने या खाने-पीने और पहनने के सामान उसे देने पर भी वह उधर ध्यान न दे सकता हो और सचमुच किसी मनुष्य के इससे बढ़कर मन्द भाग्य और क्या हो सकते है कि

जिन जनों के द्वारा उसके बचाव की कोई सूरत निकलनी सम्भव हो उनकी तरफ से ही वह कोई हमदर्दी व सहायता पाने की हालत में न रहे।"

"अहं के अनुचित अधिकार के महा भयानक फलों की उपरोक्त डरावनी तस्वीर इतने स्पष्ट रूप से मेरे सन्मुख प्रकट हुई और इससे लाखों और करोड़ों मनुष्यों का साधारणत: और सैंकड़ों सेवकों का विशेषकर खौफनाक नुकसान होने की सम्भावना मुझे इतनी साफ शक्ल में महसूस हुई कि मैं इस सारी तस्वीर को किसी कदर विस्तार के साथ लिखने में मजबूर हो गया। वास्तव में अहं के प्यार का भाव जितना किसी जन में बढ़ता चला जाए उतना ही उसे अपनी बात, अपना ख्याल, अपनी रुचि, अपना फैसला इतना प्यारा लगने लग जाता है कि उसके खिलाफ न वह स्वयं कुछ सोचने के योग्य रहता है और न ही वह किसी दूसरे (वो दूसरा चाहे उसका कैसा ही उपकारी, हितकारी और बुजुर्ग क्यों न हो) के द्वारा कुछ सुनने के योग्य रहता है। उसकी बात में कैसी ही कोई अपनी गलती हो और उसके फैसले में उसके अपने अस्तित्व के लिए या दूसरों के लिए कैसा ही हानिकारक और क्लेशदायक फल पैदा होने की आशंका हो, वह उस मोटी-से मोटी गलती और बड़ी से बड़ी हानि को स्वयं देखने और अपने प्यारे से प्यारे और बड़े से बड़े हितकारी के द्वारा भी उसके विषय में सुनने और सुनकर उस पर विचार करने के अयोग्य हो जाता है। कैसी भयानक अवस्था! हां इसी अहं प्रियता के भाव के बहुत बढ़ जाने से एक -एक जन की ऐसी दुर्दशा हो जाती है कि उसे फिर यह भी दिखाई नहीं देता कि उसकी ऐसी दुर्दशा हो रही है। उसके आस पास रहने वाले, उसके साथ मिलने जुलने वाले कितने ही जन उसकी इस कृपा पात्र अवस्था को देखते हैं, परन्तु हाय! उसे स्वयं अपनी यह तरसनाक हालत नजर नहीं आती। अहं प्रिय जन की इससे भी बढ़कर भयानक हालत उस समय होती है कि जब जिस "मैं" के अनुचित अधिकार ने उसकी ये दुर्दशा बना ली है जब एक तरफ वह अपने भीतर इस "मैं" के अनुचित अधिकार की कथा सुनने के भी योग्य नहीं रहता और दूसरी तरफ इस "मैं" के महा भयानक अधिकार के घटाने का जो साधन उसे बताया जाए, उसे वह ग्रहण और पूरा करने के अयोग्य हो जाता है।"

"बिमार होना ही मनुष्य का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है परन्तु इससे भी बढ़कर अगर एक तरफ वह बीमार अपनी बीमारी का जिक्र तक सुनना पसन्द न करता हो और दूसरी तरफ कोई दयावान डाक्टर या हकीम उसे कोई दवाई देना चाहे तो वह उस दवाई को भी लेना न चाहता हो तो ऐसे बिचारे की हालत बहुत ही तरसनाक हालत है और सबसे बढ़कर इससे भी आगे किसी बीमार की वह भयानक हालत होती है कि जिसमें पहुँचकर वह बीमार कर देने वाले सामानों और सम्बन्धियों को चाहने लगता है और उनकी तरफ भाग-भाग कर जाता है और जो जन उसके इलाज की सोचते हों, उसकी बीमारी के दूर करने की आकांक्षा और सामर्थ्य रखते हों, उन्हें घृणा करता और उनसे परे-परे रहना चाहता हो।"

देव ज्योति और देव तेज के करिश्में
(अमृत वर्षा)

सक्खर में मैंने जो आखरी दो साल गुजारे वह मेरे जीवन का स्मरणीय जमाना है। उन दो वर्षों में मेरे ऊपर भगवान देवात्मा का विशेष जादू छाया हुआ था और मैंने उस जमाने में एक और धूआंधार विरोधिता के कारण नीच जीवन धारियों की जहन्नुमी लीला का तजुर्बा किया अैर दूसरी ओर भगवान् देवात्मा के कार्य के करिश्में देखने का अवसर पाया।

एक बार एक जन मेरे पास आया और मुझे कहने लगा कि मेरी सेहत दिनों दिन बर्बाद होती जाती है जो खास बीमारी मुझे लगी हुई है उसके कारण मुझे दो चार मिनट के बाद बार बार थूकना पड़ता है, मेरी बीमारी दिनों दिन बढ़ती जाती है। यह भी पता नहीं लगता कि क्या कभी मुझे इस बीमारी से शफा मिलेगी? मैंने पूछा कि तुम्हारी तन्ख़्वाह क्या है, कहने लगे साठ रुपये माहवार। फिर मैंने पूछा कि तुम रिश्वत भी लेते होंगे, तो उसने मुस्कुराकर कहा कि हां, कभी कभी रिश्वत की आमदनी एक सौ रुपये तक पहुँच जाती है। मुझे पता था कि उसके कोई बाल बच्चा भी नहीं है। अब यह दो पति पत्नी प्राय: डेढ़ सौ रुपया रखकर भी अपना कर्जा नहीं उतार सकते, जो मुश्किल से दो तीन हजार था। उल्टा कर्जा दिनों दिन बढ़ता जा रहा था। मुझे तो साफ प्रतीत हुआ कि यह जन फ़जूल खर्च है, बद परहेज है, और स्वाद अनुराग का गुलाम है। मैंने उसको कहा कि मैं अगर तुम्हारी बीमारी को जान भी लूं तो उससे तुम्हें क्या लाभ? तुम जिन नीच सुखों के अनुरागों के दास हो चुके हो, उनके प्रेम के कारण तुम इस हालात में ही नहीं हो कि अपने जीवन की असल अवस्था को देख सको और उससे बच सको। तुम संगत में आते रहो तो तुम्हारा इस अवस्था से छुटकारा हो जायेगा। उसने यह मान लिया। कई महीनों की लगातार संगत से चुपचाप उसके हृदय में उच्च परिवर्तन आना शुरू हो गया। वह अपने नीच सुख अनुरागों से भयभीत होने लगा। उसकी बद परहेजी धीरे धीरे दूर होने लगी। उसके हृदय में रिश्वत का लेना बुरा अनुभव होने लगा। एक दिन मुझे आकर कहने लगा कि मैंने मांस खाना छोड़ दिया है और रिश्वत न लेने का संकल्प कर लिया है। मैंने पूछा कि रिश्वत लेना क्यों छोड़ते हो, उसने कहा रिश्वत लेना मुझे बुरा मालूम होता है। मैं रिश्वत लेने में अपने जीवन का घाटा समझता हूं। कुछ और महीनों की संगत के बाद वह भगवान देवात्मा की सेवकी में दीक्षित हुए। जिस दिन वह सेवकी में दीक्षित हुए, उस दिन वह बराबर तीन बजे तक मन्दिर में बैठे रहे। और कहते थे कि जब तक सेवक नहीं बन जाऊंगा तब तक मन्दिर से बाहर नहीं जाऊंगा। पहले सेवकों की दीक्षा सुबह आठ बजे होनी थी क्योंकि एक जन उस समय आ नही सकते थे इसलिए दीक्षा की सभा तीन बजे रखी गई। और वह जन साढ़े आठ बजे आकर फिर तीन बजे तक घर नहीं गया। घर में तब गया जब उसे सेवकी में ग्रहण कर लिया गया। उसने भाव प्रकाश में कहा कि देव ज्योति अति विचित्र ज्योति है। इस ज्योति ने ही मेरे जीवन के आन्तरिक रोग मुझे दिखाये हैं और देव समाज ने मुझे इस योग्य बनाया है कि मैं उन रोगों से निकल आऊं। पता नहीं मेरी वर्षों की थूक आने की बीमारी कहां गई। अब मैं

अपने शरीर में बल अनुभव करता हूं। मैं रिश्वत छोड़ चुका हूं और अपनी तनख्वाह से अपने कर्ज को उतार रहा हूं और थोड़े अरसे में मेरा सारा कर्जा उतर जायेगा। मैं स्टेशन मास्टर होकर जब यहां आता हूं तो टिकट लेकर जाता हूं। धन्य हैं भगवान देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज!

इसके भिन्न बहुत सारे और करिश्में भी उन दिनों में पैदा हुए। एक डॉक्टर जो मांस खाते थे और कभी कभी शराब भी पीते थे और अस्पताल की चीज़ों को अपने निज के कामों में खर्च करते थे और बीमारों से पैसे बटोरने के कारण बहुत कठोर दिल थे। यहां तक कि जब तक उनकी फीस पहले नहीं दी जाती थी तब तक वह किसी बीमार को देखने न जाते थे। और इसी प्रकार औरों के लिए एक डरावना जीवन बना हुआ था। वह इत्तफाक से बदलकर वहां आ गया जहां मैं काम करता था। चंद दिनों की संगत से ही उनके हृदय ने आश्चर्यजनक पलटा खाया। चुपचाप ही उसने मांस का खाना और नशों का पीना छोड़ दिया और हर प्रकार के अनुचित लालच से अपना मुंह मोड़ लिया और उसके इस आश्चर्यजनक परिवर्तन के कारण उसको भगवान देवात्मा की सेवकी में दीक्षित कर दिया गया। उस समय जो उसने अपना भाव प्रकाश किया वह इस प्रकार का था। उसने बताया, कि मैं इस कदर कठोर था कि एक दिन कुछ माहीगीर चार पांच मील से दौड़ते हुए मेरे पास आये कि डॉक्टर साहब हमारे एक आदमी की टांग टूट गई है, वह बहुत तड़प रहा है, आप शीघ्र चलें। मैंने कहा कि फीस लाए हो? वह कहने लगे कि आपको वहां जाते ही पहले फीस देंगे, फिर आप उसकी दवाई करना। मैंने इन्कार कर दिया। वह जन बहुतेरा रोए और प्रार्थनाएं की, परन्तु मैंने उनकी एक न सुनी। वह फिर वापिस चले गए और मेरी फीस ले आए और फिर मैं उनके साथ गया। मुझ कठोर ने यह अनुभव न किया, कि बीमार का क्या हाल होगा? अगर मुझे फीस न भी मिलती तो भी क्या था। मेरे लिए इतना ही काफी था कि जन दुःखी है, मैं उसका दुःख दूर करूं। अब मैंने यह प्रतिज्ञाा की है, कि पूरे 12 महीने मैं बिना फीस लेने के बीमारों के घर जाऊंगा। चाहे वह बीमार साहूकार हों, चाहे गरीब, चाहे दोस्त हो चाहे दुश्मन, चाहे किसी मजहब और मिल्लत के हों। हमारे हस्पताल में बीमारी के लिए काफी रुई आती है और पट्टियों के लिए काफी कपड़ा आता है। आमतौर पर डाक्टर लोग उसमें से बहुत सा हिस्सा अपने ही काम में ले आते हैं। मैं भी ऐसा ही करता था। अब मेरे लिए ऐसा करना असम्भव हो गया। काश! मैं भगवान देवात्मा के दरबार में हमेशा पड़ा रहूं, और अपने पापों का कफारा करके औरों की सेवा करता रहूं। उनके जीवन में आखिरकार ऐसा समय आया जबकि उनके इन भावों का तजरूबा हो गया। हमारा एक सख्त विरोधी गन्दी गालियां देने वाला जन एक सख़्त बीमारी में फंस गया और एक रात उसका बहुत बुरा हाल हो गया। उस बीमारी में उसने यह चाहा कि उस देव समाजी डाक्टर को बुलाओ, रात के शायद एक दो बजे का समय था, जब कि डॉक्टर के पास उसी विरोधी का एक रिश्तेदार पहुँचा। और उसका नाजुक हाल बताकर डॉक्टर से प्रार्थना की, कि आप कृपा करके तशरीफ ले चलें। डॉक्टर साहब को यह पता था, कि बीमार हमारा दुश्मन है। और बद जुबान दुश्मन है। फिर भी वह तैयार होकर उनके साथ चले गए और सुबह के सात बजे तक मौत और डाक्टर साहिब का जंग रहा, आखिरकारी डॉक्टर साहिब ने जय लाभ की,

और बहुत खुश होकर वापिस आए। उनकी खुशी की हद न रही, जब वह इस दृश्य को अपने सामने लाए, कि मैंने बिना फीस लेने के एक दुश्मन की सेवा की है। अब जिस ज्योति ने उनको अपना पहला काला रूप काला दिखाया और परसेवा और हानि परिशोध का रूप सुहावना दिखाया, उस ज्योति का नाम देव ज्योति है। और जिस तेज ने उसको यह भी बल दान दिया, कि पहली नीच प्रकृति से आजाद होकर वह दूसरों की विशुद्ध सेवा करे, उस तेज का नाम देव तेज है। देव ज्योति और देव तेज साक्षात् बोध करने की चीजें हैं और हजारों जनों के एक या दूसरे समय के जीवन के तजरुबात हैं। इन महा मूल्यवान देव ज्योति और देव तेज के दाता भगवान देवात्मा हैं, जिनकी पूजा करने से या जिनके देव प्रभावदायक मण्डल में वास करने से यह अमूल्य दान अधिकारियों को मिलता है।

(पी. वी. कनल)

बाकि पृष्ठ 16

मां, जिसकी ये दास्तां है, उन्हें कैसा लगा होगा, जब मालूम हुआ सबसे बड़ा बेटा बेहतरीन अर्थशास्त्री होने के बावजूद वर्ल्ड बैंक की नौकरी ठुकराकर सिर्फ लिखना चाहता है.... वो भी कविताएं। कहता है, अगर उसकी किस्मत में भूखे मरना लिखा है तो मरेगा, लेकिन काम लिखने का ही करेगा। मां की हां ने बेटे का हौसला बढ़ा दिया। वो बड़ा अंग्रेजी उपन्यासकार बना। मां का नाम है - लीला सेठ। भारत की सबसे पहली महिला हाईकोर्ट चीफ़ जस्टिस और लेखक पुत्र हैं विक्रम सेठ। गोया, बात यहीं तक नहीं है। मां किसी चट्टान की तरह थीं, लेकिन तब बीचोबीच से दरक गई, जब मालूम चला कि 'सूटेबल ब्वाय' (लड़का) लिखने वाला उनका बेटा खुद के लिए सूटेबल लड़के की तलाश कर रहा है। मां दरक तो गई, फिर खुद को समेट लिया। उन्होंने इसमें भी बेटे का ही साथ दिया। उन दिनों समलैंगिकता बड़ा अपराध मानी जाती थी, टैबू था इसको लेकर। अपनी औलाद के अलहदा किस्म के फैसलों पर भी बच्चों के साथ होने का माद्दा सिर्फ मां के पास है। जिन चीज़ों पर पूरी कायनात खिलाफ होती है, तब मां बच्चों के साथ होती है।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

जीवन की सफलता
(अध्यात्मिक चेतना के नये स्वर)

मनुष्य के भीतर जो कुछ श्रेष्ठतम है, उसका जब उसके जीवन पर सब से बढ़कर अधिकार होता है, तब ही वह अपने जीवन को अधिक से अधिक सफल और सार्थक बना सकता है। मनुष्य में जो पाश्विकता है, वह उसके जीवन को सफल नहीं बनाती। किसी मनुष्य का केवल यह जीवन वृतांत लिखना कि वह इतने वर्ष जीवित रहा, और वह सारी आयु केवल धन कमाने और अन्य पदार्थ इकट्ठे करने में व्यस्त रहा, विवाह करके वह पत्नी के साथ रहा, उससे जो सन्तान हुई, उसे उसने पढ़ाया और फिर मरते समय अपनी सारी कमाई को पत्नी और बच्चों के हवाले कर गया - केवल ऐसा जीवन चरित्र लिखना अपने समय को नष्ट करना होगा। परन्तु लाखों और करोड़ों मनुष्य इस के सिवाए और कुछ नहीं करते। उनके जीवन की दौड़ यहीं तक समाप्त हो जाती है। उनके ऐसे जीवन में कोई भी बात ऐसी नहीं जो दूसरों को कोई अच्छी प्रेरणा दे सके। ऐसे जीवन में केवल पाश्विक रुचियों की तृप्ति और नीच वासनाओं को चरितार्थ करने के अतिरिक्त और कोई सफलता नहीं होती। ऐसे मनुष्य अपने जीवन से कोई निर्माण का कार्य या किसी हितकर बात की उत्पत्ति नहीं करते। वह संसार की उन्नति और भलाई में कोई भाग नहीं लेते। वह अपने जीवन से संसार को पहले से अच्छा और पहले से अधिक सम्पन्न छोड़कर नहीं जाते। न तो वह अपने पीछे कोई ऐसी बात छोड़ कर जाते है, जो संसार को उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ा सके ओर न वह अपने जीवन से कोई ऐसा दृष्टांत संसार के लिए छोड़ते है, जो दूसरों का मार्ग दर्शन कर सके। ऐसे जन भुला दिये जाने के ही योग्य हैं। वह चुपचाप इस दुनियां से विलीन हो जाते हैं। जब वह मर जाते हैं, तो उनका इस पृथ्वी पर कुछ शेष नहीं रह जाता। उनको कोई याद नहीं करता। मानो उनका जन्म ही नहीं हुआ था। कैसा दुर्भाग्य! नीच रुचियों के दास मनुष्यों के लिए इससे बढ़ कर सज़ा और क्या हो सकती है? समझदार और बोधी मनुष्य के लिये यह दुष्परिणाम कितना शिक्षा प्रद है!!

अपने जीवन के फलों के विचार से ऐसे अधम आत्मा मानव हृदयों में कोई स्थान प्राप्त करने के अधिकारी नहीं। और उनका अपना जीवन जिस से किसी हितकर फल की उत्पत्ति नहीं हुई, उनके अपने लिए भी ऐसा है, जिस पर हम केवल तरस खा सकते हैं। जैसे एक घोड़ा जो पचास या सौ फुट की रस्सी से बंधा हुआ है, वह केवल उतने ही फुट के चक्कर में घूम सकता है और उस सीमा से आगे एक इंच भी नहीं जा सकता, उसी प्रकार केवल नीच रुचियों की तृप्ति में अपना जीवन बिताने वाले अपनी उसी सीमा में रह कर इस संसार से विदा होते हैं। उनका सोच विचार उस सीमा से आगे नहीं जा सकता। मानसिक विचार से भी उनकी दुनिया यहीं समाप्त हो जाती है। उनके जीवन से जो भी कुछ क्रिया होती है, वह नीच भावों के दायरे के अन्दर ही होती है। वह नीच भावों और नीच

इच्छाओं के पिंजड़े में बन्द और उसके कैदी हैं। उनका जीवन प्रगति-हीन जीवन हैं-उस बौने मनुष्य की तरह जो उतना ही रहता है और कभी आगे नहीं बढ़ता। वह निस्सार और निष्फल जीवन होता है। उसकी कोई सार्थकता नहीं होती। मनुष्य जन्म पाकर और बुद्धि रख कर केवल ऐसा पाश्विक जीवन व्यतीत करना कैसा दुर्भाग्य! कैसी सज़ा!! परन्तु ऐसे लाखों करोड़ों व्यक्तियों को कभी अपनी ऐसी अवस्था पर अफ़सोस तक नहीं होता और उन्नति करने के और उच्च बनने के जो अवसर उन्होंने खो दिए हैं, उनके लिए वह कभी पछताते नहीं देखे जाते। वह अपनी अवस्था से पूर्णत: सन्तुष्ट हैं। वह एक ऐसे सुअर की न्याई हैं, जो गन्दगी में ही मस्त और सन्तुष्ट रहता है।

जब मनुष्य सार्थक जीवन व्यतीत करता है, तो वह मानव उन्नति के पैमाने में ऊंचा उठता है। वह वैज्ञानिक धन्य है जिसने मनुष्य के लिये कोई बड़ी हितकर खोज की है। एक कलाकार जो किसी भद्दी वस्तु को सुन्दर वस्तु में बदल देता है, मुबारिक है एक लेखक जो ऊंचे विचार अपनी लेखनी द्वारा फैलाता है, वह मनुष्यों को प्रसन्नता और उच्च प्रेरणा प्रदान करता है-यदि धन का प्रलोभन उसके काम को अधिक से अधिक सुन्दर और हितकर बनाने में बाधा जनक बनता है, तो उतने अंश में उसकी सार्थकता और सफलता भी कम हो जाती है। जब किसी उच्च वस्तु का विशुद्ध प्रेम मनुष्य के जीवन का परिचालक बनता है, तब ही वह अपने जीवन को अधिकतम सार्थक बना सकता है।

माईकेल ऐंजिलों को संसार का अनुपम कलाकार माना जाता है, जिसने अपनी कला के द्वारा नवीन सुन्दरता को जन्म दिया। उसने अपना जीवन गरीबी से आरम्भ किया। परन्तु प्रलोभन कभी उसे छू न पाया। उसे एक मन्दिर या चर्च पर चित्रकारी करने का काम दिया गया। उसके लिए पारिश्रमिक या उजरत लेने के लिये भी उसे कहा गया, परन्तु उसने कोई भी उजरत लेने से साफ़ इन्कार कर दिया। उसने यह अनुभव किया कि उजरत में धन लेना उसके कला प्रेम को स्वतंत्र रूप से चमकने नहीं देगा। उसने स्वार्थ से पूर्णत: ऊपर होकर उस काम में अपने आप को रत कर दिया। उसकी मानसिक शक्तियों और हाथों ने अपने उच्चतम स्तर पर काम किया। न केवल मानवता के लिए उसने अपनी महान कला का नमूना अपने पीछे छोड़ा, किन्तु वह स्वयं भी कला की दुनिया में अमर हो गया। एक पादरी ने उस पर तरस खाया कि तुम ने शादी नहीं की और तुम सन्तान से वंचित हो जिस से नाम और यश स्थाई होता। माईकेल ऐंजिलो ने उत्तर दिया कि मेरी कला मेरे लिये पत्नि से भी बहुत बढ़ कर है। उसने मुझे सदा कार्यशील बनाये रखा है। मेरी कला की कृतियां मेरे बच्चे होंगे, जो मैं अपने पीछे छोड़ जाऊंगा। और जिनके द्वारा मैं संसार में जीवित रहूंगा। और सचमुच ही उस की कला और उसकी कृतियों ने उसे अमर बना दिया। क्या मनुष्य की सन्तान जिन्हें मूर्ख इन्सान अपनी सब धन सम्पत्ति दे जाते हैं, अपने माता पिता के नाम के यश और गौरव को बढ़ाती हैं? लाखों बच्चे अपने माता पिता के नाम को न केवल रोशन नहीं करते, किन्तु उनके धन आदि का दुरूपयोग करके उन्हें भी बदनाम करते हैं।

बीगल जहाज़ की यात्रा ने चारलस डारविन के जीवन को महान बना दिया। डारविन ने संसार को

बताया है कि जीवधारियों का और मनुष्य का विकास कैसे हुआ है। वह यात्रा डारविन ने विशुद्ध भावों और मिशनरी वृत्ति से की। बिना किसी तनखाह के वह उस खोज की यात्रा में शामिल हुआ। उसने बहुत सारे प्रमाण इकट्ठे किये और जीवन विज्ञान और भूविज्ञान का बहुत बड़ा कार्यगत ज्ञान प्राप्त करके वापिस आया . . .। पक्षपात, लालच, डर और लोगों से प्रशंसा प्राप्त करने के भावों से वह ऊपर था। उसे तो वैज्ञानिक ज्ञान का प्यार था। उसी प्रेम का उस पर अधिकार था। इस निस्वार्थ प्रेम ने उस पर एक ऐसा महान सत्य प्रकाशित कर दिया कि जिसने संसार की सारी विचार धारा को बदल दिया और मज़हबों की इलहामी किताबों पर ऐसा कुठाराघात किया कि उनकी मौत में कोई सन्देह नहीं रहा। डारविन अमर हो गया। उसके हृदय की महानता का अनुमान निम्नलिखित घटना से हो सकता है।

डारविन ने विकास तत्व की महान खोज की थी कि एक दिन प्रात: एक महान ब्रिटिश वैज्ञानिक एलफ्रैड रसल वैलेस का एक पत्र और लेख मिला जिसमें उसने विकास की वही थ्योरी लिखी थी। डारविन का कथन है कि ऐसी दो व्यक्तियों की मिलती जुलती खोज मैंने कभी नहीं देखी थी। यदि वैलेस के पास मेरी खोज की हस्तलिखित लिपि होती, तो वह इससे सुन्दर संक्षिप्त सार और नहीं लिख सकता था।

डारविन ने अनुभव किया कि यह ईमानदारी नहीं होगी यदि मैं अपनी खोज तुरन्त छपवा दूं जबकि मैं जानता हूं कि वैलेस भी इस मैदान में हैं। डारविन ने यह मामला अपने मित्रों लायल और हूकर के सन्मुख रखा। उन मित्रों में अनुभव किया कि न्यायोचित बात यह होगी कि उन दोनों की खोज को एक साथ छाप दिया जाए।

डारविन के महान हृदय ने एक साथी महान वैज्ञानिक को पीछे धकेलने और स्वयं अधिक ख्याति प्राप्त करने का ओछापन कभी नहीं अपनाया। डारविन ने इस मामले में स्वार्थ और ईर्ष्या से ऊपर होने का परिचय दिया। वह तो उच्च भावों से ही परिचालित हुआ। उसने विशुद्ध भावों से एक महान सत्य की खोज की और फिर अपने श्रेष्ठ व्यवहार से संसार के हृदय में स्थान पाया। उसने अपने ऐसे पद-चिन्ह छोड़े हैं, जो मिटाए नहीं जा सकते। उसने अपने सात्विक भावों के कारण अपने उच्चतम स्तर पर जीवन व्यतीत किया। उसके लिये यह कितने गौरव की बात थी कि वह संसार को अपनी ऐसी विरासत या देन प्रदान करे। वह मानव कितने क्षुद्र, कितने कमीने और कितने ओछे हैं कि जो केवल स्वार्थ का जीवन व्यतीत करते हैं और अपने सारे जीवन के परिश्रम की कमाई केवल अपनी सन्तान को ही दे जाना चाहते हैं।

जिस व्यक्ति को किसी सात्विक या उच्च भाव से प्रेरित नहीं किया और जिसने विशुद्ध भावों से कोई पर सेवा नहीं की, उसने अपना जीवन अकारथ खो दिया। हां कई विचार से उसका जीवन ख़तरनाक जीवन है। जो सामूहिक मानव भलाई में योग नहीं देता और अपने जीवन से कोई भली गति करके एक सहायक शक्ति प्रमाणित नहीं होता, उसने मनुष्य बनने के अधिकार और गौरव को बिल्कुल खो दिया।

यदि मानवता ने सच्चे अर्थों में उन्नति करनी है और उच्च कोटि की सभ्यता के स्तर पर जीना है, तो उसे ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना होगा जो एक या दूसरे विशुद्ध उच्च भावों से सुशोभित हों।

मूर्तियों और मन्दिरों के आडम्बर

31 अक्तूबर को प्रधान मन्त्री नरेन्द्र मोदी जी ने 182 मीटर ऊंची सरदार पटेल जी की मूर्ति का उदघाटन किया। जिसमें 3 हज़ार करोड़ से अधिक खर्च हुआ। अनुमान करो कि तीन हज़ार करोड़ रूपये में कितने गरीबों को मकान, रोटी और अन्य सहूलतें मिल सकती थी। यह गरीब देश यहां लाखों की गिणती में लोग फुटपाथों पर भूखे पेट सोते हैं, पेट भरने के लिए अपने बच्चे तक बेच देते हैं, हमारे नेतागण को क्या अधिकार है कि वह जनता के टैक्स का पैसा मूर्तियों पर लगाएं। यदि सरदार पटेल जिन्दा होते, या अब भी परलोक से देख रहे होंगे, और आंसू बहाते होंगे, मेरे देश का पैसा मुझे वा अपने आपको महामण्डित करने में, क्यों लगाया जा रहा है?

उससे भी आगे आजकल कुम्भ के मेले के लिए 4 हज़ार करोड़ से भी अधिक केवल उस स्थान को संवारने, सजाने, लाईटों से जगमगाने में खर्च किए जा रहे हैं? क्यों, यदि किसी को श्रद्धा है, तो वह अपना प्रबन्ध करे, सरकारी खजाना इन कर्मकाण्डों पर खाली करने का किसी को क्या अधिकार है। हमारा हज़ारों करोड़ रुपया इन कर्मकाण्डों पर लगाया जाता है, जबकि जो मान्यता वाले मन्दिर हैं, उनकी लाखों की कमाई एक दिन की है, उनको क्यों नहीं कहा जाता कि वह इन कर्मकाण्डों पर खर्च करें। अन्ध विश्वासों ने भारत को ऐसा जकड़ लिया है कि मन्दिर, मन्दिर का शोर मचा रहे हैं, अब राम मन्दिर की दुहाई दी जा रही है। हो सकता है कि कोर्ट का फैसला इन दुहाई देने वालों के पक्ष में न हो, उस सूरत में दंगे फसाद करवाने के लिए हमारे धार्मिक कहलाने वाले लीडर तैयार बैठे हैं। कोई उनसे पूछे कि क्या मन्दिर बन जाने से देश में, पाप, अपराध, कत्ल, दंगे, बलात्कार कम हो जाएगे? रामचन्द्र जी एक महा पुरुष थे और बहुत कीमती गुण रखते थे, उनका अनुकरण कौन कर रहा है? वह अपने पिता के हुक्म पर 14 वर्ष जंगलों में भटके, कन्द मूल खाया, परन्तु हमारे इन राम के पुजारियों में कितने हैं जो माता - पिता की सेवा के झण्डे गाड़ रहे हैं, भारत में वृद्ध आश्रमों की गिनती बढ़ रही है, ज्यों - ज्यों मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे बढ़ रहे हैं।

हम विकास का नारा लगा रहे हैं, तो क्या हम मन्दिर बनाकर, मूर्तियां बनाकर देश का विकास करेंगे? देश का विकास स्कूलों, कालिजों और यूनिवर्सिटियों के स्तर को बढ़ाने से होगा। T.V. में दिखाया गया था कि हमारी यूनिवर्सिटियों की क्या दुर्दशा है। लैक्चरर के पद खाली पड़े हैं, इमारतें जर जर हो रही हैं। स्कूलों में अध्यापक नहीं, यदि हैं तो वह काम नहीं करते, उन पर कोई निगरानी नहीं। दिन पर दिन शिक्षा का स्तर गिर रहा है, हमारे नौजवान नशों की गर्त में गिर रहे हैं। भाषणों से देश का विकास नहीं हो सकता, जब तक देश को इस पौराणिक जाल से नहीं निकालेंगे, मिथ्या विश्वासों से नहीं निकालेंगे, उनकी सोच को विज्ञानमूलक नहीं बनाएंगे, हमारे पुल, सड़कें नहीं सुधरेंगी, शिक्षा का स्तर नहीं सुधरेगा, तब तक विकास का सपना, सपना ही रह जाएगा। चीन ने 300 किलोमीटर का ऐसा शानदार पुल बनाया है, उसके शहर, उसकी खेलों में भागीदारी, सब हमें पीछे छोड़ रही है। इसका कारण

हमारी पिछड़ी हुई सोच है।

हमें अच्छे हस्पताल चाहिए, कुपोषित बच्चों को भरपेट खाना चाहिए, ऐसा प्रबन्ध हो कि कोई भूखे पेट फुटपाथों पर न सोए। सरकारी स्कूलों का स्तर ऊंचा करना चाहिए, नौजवानों को नशों से बचाने के लिए उन्हें नौकरियां चाहिए, उनके लिए ऐसे कोंस खोलने चाहिए, जिससे वह थोड़ी पूंजी में अपना काम चला सकें, किसानों को अच्छे बीज, खाद चाहिए, खेती खत्म हो रही है, जो किसान सब का पेट भरते हैं, वह भूखे पेट सोते हैं, कर्ज़ में डूबे हुए हैं, खुदकुशी कर रहे हैं, लड़कियों की सुरक्षा चाहिए, मन्दिर, मूर्तियां या धार्मिक स्थल नहीं चाहिए, देश का विकास तभी सम्भव है।

अब जो गौ रक्षा का नया शगूफा छोड़कर कितने ही बेगुनाहों को गुण्डों के झुण्डों ने मार दिया है, अब कोई पूछे कि गौ रक्षा के लिए वह लोग क्या कर रहे हैं, यह बहुत अच्छी बात है कि गौ - वध रोका जाए, परन्तु टी.वी. पर उन किसानों की हालत दिखाई जा रही थी, जो अवारा गाओं से परेशान हैं, एक - 2 गांव में इतनी आवारा गाएं हो गई हैं, कि वह उनके खेत तबाह कर रही हैं, किसान दिन भर काम करके रात को खेतों की रखवाली करते हैं, गाएं एक खेत से भगाते हैं, तो दूसरे खेत में भूखी प्यासी घुस जाती हैं, फिर किसानों की आपस में लड़ाई होती है। गौ - रक्षकों में से एक भी आगे नहीं आता जो उनकी जिम्मेवारी ले। गौशाला खोली ही नहीं गई, यदि कोई है तो उनका बुरा हाल है। इन राजनैतिक हथकण्डों से हमारे देश का क्या विकास हो रहा है? कट्रपन्थी बढ़ रहे हैं। सहिष्णुता समाप्त हो रही हैं। हमारी राजनैतिक पार्टियों को केवल वोटो की चिन्ता है, विकास की नहीं। हमारे देश के प्रतिष्ठित विभागों की साख गिर रही है। न्यायपालिका की शाख गिर रही है।

अब समय है कि हम विज्ञान मूलक सोच को बढ़ावा देवें। पूजा, पाठ, हवन, यज्ञ, कर्मकाण्ड देश को नीचे ले जाएंगे।

हमारा सौभाग्य है कि देव समाज के बानी ने आज से 130 - 140 वर्ष पहले विज्ञान मूलक धर्म की स्थापना की, जिसमें इन सब मिथ्या विश्वासों और मोटे पापों से अपने अनुयाईयों को आज़ाद कर दिया, परन्तु इतने वर्षों के बाद भी हमारे तथाकथित धर्मों में इनकी बढ़ोतरी हुई है, इसलिए हमारे देश में बेइन्तहा Sources होने के बावजूद हम पिछड़ रहे हैं। हमारे एक प्रतिष्ठित नेता ने तो पब्लिक में यह कह दिया कि पुराने ज़माने में सर्जरी इतनी विकसित थी कि एक बच्चे के सिर पर हाथी का सूंड लगा दिया, अब यह सोच हमें कहां ले जाएगी। अन्ध विश्वासी झूमझूम कर इस पर इतराते हैं। आज कल पापों ने, नशों ने तो घर तबाह किए ही हैं, परन्तु मिथ्या विश्वास इससे भी बढ़कर हानि कर रहे हैं।

आजकल कुम्भ स्नान करने वाले लोग सोच रहे हैं कि उनके तो स्नान से सब पाप धुल जाएंगे। इस बात का बढ़चढ़ कर प्रचार किया जा रहा है। गंगा की सफाई की नहीं जा सकी, उसके गन्दे पानी से कितने रोग होंगे, इसकी कोई चेतावनी नहीं, पर पाप धुल जाएंगे और अगले कुम्भ तक और पाप करने की छूट मिल जाएगी। कैसी अबोधता वा अन्धता की सोच !

जब ऐसी मिथ्या के गर्त में देश दिन पर दिन डूब रहा है, तो विकास का सपना ता सपना ही बनकर रह जाएगा।

- सुरजीत बराड़

सब माताओं की याद में

हक़ीक़त तो यह है कि औरत मां बनने के बाद एक तपस्वनी, बन जाती है, उसे अपने दुख सुख सब भूल जाते हैं। गहरे से गहरे संकट में, विपक्ष में, गरीबी में, वह खुद तंगदस्त रहकर प्रत्येक सुख बच्चे की झोली में डाल देती है। जहां पिता का सहयोग तो रहता है, परन्तु मां बच्चे की कोमल भावनाओं को जिस गहराई में समझती है, और उसकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए जैसे चट्टान बन जाती है, वह और कोई नहीं कर सकता। बच्चे और मां का रिश्ता अनमोल है। मां के हौसले ने बड़े 2 संगीतकार, कलाकार पैदा किए हैं। कुछ माताओं के उदाहरण प्रस्तुत हैं :-

(1) एक मां का जिक्र यहां लाज़िमी है। नाम है सरदार बेगम। सामांती सोच वाले रईस जागीरदार फ़ज़ल मोहम्मद की बेगम। ये मां और कोई नहीं, बल्कि हिन्दी फिल्मों में गीत रचने वाले गीतकार और उर्दू के बड़े अदीब साहिर लुधियानवी की वालिदा थीं। साहिर के वालिद फ़जल मोहम्मद की कई बीवियां थीं। ऊपर से साहिर फ़जल मोहम्मद की कई बीवियां थीं। ऊपर से साहिर और फ़ज़ल दोनों ही अलग सोच के इंसान थे। साहिर के पिता उनको अपना बेटा नहीं मानते थे, लेकिन इस नाइंसाफी के खिलाफ़ साहिर की मां डटकर खड़ी रहीं। अपने शौहर और साहिर के वालिद पर अदालती मुकदमा दायर कर दिया। साहिर सिर्फ 13 साल के थे, जब वो भी मां के साथ अदालत में पिता के ख़िलाफ डटकर खड़े रहे। पिता ने साहिर को जान से मारने की धमकी दी पर मां थी न साथ, ऐसे में औलाद का बाल भी कोई कैसे बांका करता। साहिर को बचाने के लिए गार्ड रखे, सब जेवर बेच डाले। मुफ़लिसी के घने साए में सिमटी रहीं, लेकिन बेटे की जान बचा ली। साहिर को बहुत सेंसेटिव शायर और गीतकार बनाया। जमाने के हर दौर में मां वैसी रही है।

(2) एक और शख्सियत की याद आ गई है - संगीतकार हेमंत कुमार। इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने घर से निकले और हारमोनियम की 'कीज़' में कहीं खो गए। पिता खफ़ा थे..... नहीं चाहते थे कि हेमंत गायक बनें, लेकिन मां एक बार फिर साथ थी। उन्होंने हेमंत को जाने दिया। अपनी डायरी में लिखा - वो दिन दूर नहीं, जब हेमंत के गानों के रिकॉर्ड्स बड़ी-बड़ी दुकानों में सचिन देव बर्मन और पंकज मलिक के म्यूजिक रिकॉर्डस के साथ रखे जाएंगे। मां की आस्था का चमत्कार ही था कि हेमंत दा ने खूब गाने गाए (हिन्दी-बंगाली के अलावा अन्य भाषाओं में भी).....और उन रिकॉर्ड्स के लिए अलमारी में ख़ास जगह बना ली। वे रवींद्र संगीत के भी जानेमाने कलाकार बनकर उभरे। मां के यकीन का इकबाल फिर बुलंद था।

(3) एक और बात याद आती है..... जो खुद तो फ़िल्मी नहीं हैं, लेकिन उन्होंने भारतीय फ़िल्मों को न बुझने वाला एक सितारा ज़रूर दे दिया। कुछ इस तरह है ये अफ़साना की उन्होंने महात्मा गांधी को एक ख़त लिखा। ख़त का मजमून कुछ यूं था - 'बापू, मैं भी आज़ादी के अंदोलन में शामिल होना चाहती हूं.... मेरा एक छोटा सा बच्चा है.... परिवार है, लेकिन मैं देश के लिए कुछ करना चाहती हूं।' खत बापू को मिला। लौटती डाक से उन्होंने जवाब लिखा- 'नहीं... नहीं... , तुम घर-परिवार मत छोड़ो। अपने बच्चे की अच्छी परवरिश करो.... उसे अच्छा इंसान बनाओ, ताकि वो देश की सेवा कर सके।' मैंगलोर से ख़त लिखने वाली ये मां कौन थी, जानते है....? ये थीं-वसंती पादुकोण। इस ख़त में जिस बच्चे का जिक्र है, वो वसंत कुमार शिव शंकर पादुकोण थे। अंधेरे-उजाले का अनूठा शोमैन गुरुदत्त। गुरुदत्त पर मां का इतना प्रभाव रहा कि वो अपनी फिल्मों के राइटर भी मां से पूछकर तय किया करते थे।

शेष पृष्ठ 10 में

शुभ संग्राम

25 तारीख, चण्डीगढ़ में, ईतवार की सभा के बाद बाहर प्रचार के लिए जाने और महोत्सव मुबारक के लिए प्रेरणा करने का प्रोग्राम बन गया। श्रीमान बलदेव सिंह जी और गोपाल जी 12 बजे सिरसा की तरफ निकल पड़े।

मानसा :- वहाँ डा० सुबोध गुप्ता जी के पास कुछ देर रुके। उनके चाहने पर सारे परिवार को लेकर एक छोटी सी सभा की और सभा में मनुष्य को देवसमाज के महादुर्लभ वातावरण की बरकतों और उससे लाभ उठाने पर जोर दिया। डा० साहब अच्छे प्रभावित हुए और फिर भी आने के लिए प्रार्थना की और एक हज़ार रूपया चंदा आदि के लिए दिया। वहाँ से पार्टी शाम को 6.15 बजे सिरसा होती हुई मल्लेंका पहुँच गयी। धर्म सम्बन्धियों ने सभा 7.30 रखने के लिए बहुत परिश्रम करके मन्दिर में तैयारी की हुई थी। सभा में 25 के करीब हाज़री थी। भजन के बाद सभा में वातावरण के भले और बुरे प्रभावों के बारे में खूब विस्तार से बताया गया। सभापति जी ने बताया कि एक देव समाजी जन की चंद मिनटों की संगत ने मेरी गाली निकालने की आदत हमेशा के लिए छुड़ा दी। वर्षो बाद उसी नेक आदमी ने सभा में बताया कि वह बुरी संगत से घिरकर खुद गाली निकालने लग गये इसी तरह और बहुत हृदय स्पर्शीय घटनाएं बतायी गयी। फिर देव समाज के अमृत - मयी प्रभावों की घटनाएँ बताई गयी और हाजरीन को उससे किसी कीमत पर भी वंचित न होने की प्रेरणा की। बहुत सुन्दर वातावरण बना। एक धर्म सम्बन्धी ने प्रेरित होकर एक भजन गाने की अनुमति ली और "तेरियाँ उच्च सँगता सदगुरू" आवेश में भरकर गाया। अगले दिनों का प्रोग्राम बताकर सभा समाप्त की गयी।

26.11.2018, दिन सोमवार, सुबह 8.30 बजे :- अर्चन के बाद भजन गाया और फिर सभापति जी ने बताया बाहरी प्रणाम, नमन, अर्चना और भजन आदि हम भले के लिए करते हैं मगर उससे सच्चा भला नहीं होता। प्रणाम ओर नमन उच्च गुणों के देखने और महसूस करने के बिना फीका ही रह जाता है। इसी तरह प्रार्थनाएँ और भजन भी गुरू के महान रूप के सामने आने और महसूस करने बगैर बेअसर रहते हैं। मनुष्य को अन्धेरे का जीव होने के कारण न अपने अन्धकार का न हानि या लाभ का न अपनी बुराई का पता लगता है। हम अपने सुख को लेकर अपनी दिनचर्याएं और सब काम काज करते रहते है। अन्धेरे में सुख अनुराग बढ़ते रहते हैं और हानि होती रहती है। 9.00 बजे के बाद प्रिंसीपल सरताज जी के स्कूल से कुछ टीचर, मुलाजम व विद्यार्थी लड़के, लड़कियाँ जो कि 25 - 30 संख्या में आ गए थे, उनके आने पर सभा का विषय बदलना पड़ा। इससे सभापति जी ने बताया कि जैसे सब विद्यार्थी पास होना चाहते हैं उसी तरह अच्छे इन्सान बनना चाहते तो सभी हैं परन्तु बना कैसे जाए इसका किसी को पता नहीं। अच्छा इन्सान अच्छे भावों, उच्च गुणों के पैदा करने से बना जाता है। फिर श्रद्धा, सन्मान के पैदा करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया इसके लिए कई घटनाएँ पेश की गयीं। फिर आगे बताया कि इसके अलावा भी कई उच्च गुण हैं जिनसे इन्सान अच्छा बनता है। सभा का वातावरण अच्छा बन रहा था।

शाम 7.30 बजे :– सभा में महिमा सम्बन्धी भजन के गान के पश्चात सभापति जी ने अपना ब्यान शुरू किया इस सभा में हाजरी 35 - 40 के करीब थी सभा में बताया गया कि ये सच्चाई सदा स्मरण रहे कि सारी दुनिया के सब दुख, मुसीबतें, लड़ाई, झगड़े, हानियाँ, अन्मेल और बुराइयों की जड़ हमारे अन्दर के नीच अनुराग हैं। कुछ नीच अनुराग सबके अन्दर बहुत ज्यादा हावी रहते हैं। अहं अनुराग सम्बन्धी, धन सम्बन्धी, काम अनुराग और मोह अनुराग सम्बन्धी नीच अनुरागों में सब प्रबलता से जकड़े हुए हैं। धन अनुराग भी हम सब में बहुत बुरी तरह से हावी होता है। फिर सभापति जी ने धन अनुराग की बहुत भयानक तस्वीर बड़े-बड़े देवसमाजी जनों के दृष्टांत पेश करके बड़े दुख और गम्भीरता से पेश की जिससे अच्छा प्रभावशली मण्डल बन गया और कुछ अधिकारी जनों ने अवश्य प्रभावित होने और अपनी जीवन में इसकी लीला देखने का अवसर पाया, जो उनके कुछ प्रकाश से पता चलता था। एक जन ने अपनी पत्रिकाओं के चदे के 500/- रूपये अदा किये। ये सभा प्राय: 9.00 बजे तक जारी रही।

27–11–2018, दिन मंगलवार, सुबह 8.30 बजे :– परम पूजनीय भगवान की छवि के अर्चन के बाद एक भजन का गान किया गया। सभा में 30 के करीब जनों की हाजरी हो गयी थी। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य पशुओं से आया है और पशु वृत्ति इसमें बहुत देर तक काम करती रहती है। कई अंगों में मनुष्य पशुओं से भी नीचे चला जाता है। भारतीय धर्मो ने सम्बन्धों को जंजाल बताया है, और गुरू महाराज ने सम्बन्धों में परस्पर सहाय-सेवा त्याग द्वारा धर्म जीवन बताया है। फिर सभापति जी ने गुरू महाराज के दर की नादर और अद्वितीय विशेषता बताते हुए कहा कि ये दर ही केवल मात्र अकेला ऐसा है कि जहाँ मनुष्यों के अन्दर गुरू महाराज की रोशनी प्रवेश करने पर उन्हें नाना सम्बन्धों में अपना अपराधी, दुष्ट, हानिकारक, दुखदायी और नीच रूप नज़र आता है। जिस सम्बन्ध में अपना घटिया रूप नज़र आता है, उस सम्बन्ध में सच्चा परिशोध और क्षमा याचना और सच्चा दण्ड आदि भुगतने से नयी बहार आ जाती है। फिर माता-पिता भाई बहन देवरानी-जेठानी पति-पत्नि आदि में अधिकारी मनुष्यों को अपना घिनौना व्यवहार और रूप नज़र आया और किस तरह सच्चे अधिकारी जनों में शुभ परिवर्तन आए, किस तरह नारकीय सम्बन्धों में स्वर्ग पैदा हुआ, उसका चित्रण सभापति जी ने श्रद्धा और दीनता के भावों से भरकर और एक-एक घटना को भरे हृदय से वर्णन किया। बहुत अच्छा वातावरण बन रहा था और बहुत से जन प्रभावित हो गुरू के चरणों में झुक रहे थे और इस दर के पता पाने के सौभाग्य को अनुभव कर रहे थे। फिर महोत्सव के विशेष अवसर पर पहुँचने के लिए अपील की गयी। कितने ही धर्म सम्न्धियों ने अच्छा रेस्पोन्स दिया। 1600 रूपया नकद दान व जसविन्द्र सिंह जी ने 500/- अखबार चन्दा दिया। इस तरह यहाँ का संक्षेप सत्संग सम्पन्न हुआ। 2.00 बजे के करीब उक्त श्रीमान जी और 3 जनों के साथ गंगानगर के लिए रवाना हो गये।

गंगानगर, 27–1–2018 :– इस स्थान पर खत्री धर्मशाला में सभाओं का और धर्म सम्बन्धियों के ठहरने का प्रबन्ध किया गया। श्रीमान अशोक जी ने अपनी साथी के साथ सफाई, बिछाई की बहुत मेहनत से सेवा की। श्रीमान दिवान जी ने बहुत उत्साह

से बहुत लोगों को सभा का पता दिया। रात को 8.00 बजे सभा रखी गी जिसमें पढ़े लिखे जनों की 30 या कुछ उपर हाज़री हो गयी थी। सभा असरों पर थी, प्रभाव क्या होते हैं और वो किस तरह तबदीली पैदा करते हैं, बुरे असरों और भले असरों के बारे में बताया गया। और उनके नतीजे भी बताए गये। फिर देव असर क्या होते हैं और उनका अद्वितीय कारज ठोस घटनाओं द्वारा बताया गया। हाजरीन में से बहुत जन अच्छा लाभ उठाते देखे गये।

28 – 11 – 2018, सुबह 9.00 बजे :– सभा करायी गयी। अच्छी हाज़री थी। मनुष्य की हस्ती में मुख्य वस्तु उसकी विकसित जीवनी शक्ति या आत्मा है। उसके सम्बन्ध में सारे संसार में घोर अन्धकार है। आत्मा के अस्तित्व के बारे में उसकी हानि और नाश के बारे और रक्षा और विकास के बारे में समझा – समझा कर बताया गया। बहुत से जन प्रभावित हुए।

शाम 8.00 बजे :– इस सभा में भी अच्छी हाजिरी थी। बताया गया कि नेचर में और उसके अस्तित्वों में शक्तियाँ काम करती हैं, मनुष्य के जीवन में नीच शक्तियों की भरमार है और वही मनुष्य का नाश करती हैं, उनके बारे में खुल कर बताया गया। उन्हें देखने और उनसे सुरक्षा पाने और उच्च शक्तियों को पैदा करने पर बहुत जोर देकर समझाने की कोशिश की गयी। यह सभा भी अच्छी प्रभावशाली रही।

29 – 11 – 2018, सुबह 9.00 बजे :– आखिरी सभा की गयी इसमें भी 25 के करीब हाजिरी थी। सभा में बताया गया कि उच्च भाव शक्तियों के बिना कोई धर्म नहीं होता। कृतज्ञता का भाव शक्ति रूप में हृदय में पैदा हुए बगैर कोई अच्छा इन्सान नहीं बनता ओर धर्मवान नहीं होता। नाशुक्रे और कृतघ्न जनों की और शुक्रगुजार जनों की सच्ची घटनाएँ पेश की गयी। कृतज्ञ भाव की सुन्दर व्याख्या की गयी। केवल धन्यवाद करने से कृतज्ञता नहीं आती। कुछ जनों को अच्छा प्रभावित होने का मौका मिला और कुछ जनों ने बैठ कर बातें भी की। और एक रिटायर्ड बैंक मैनेजर ने भी अच्छा फायदा उठाया। और महोत्सव पर पहुँचने का वायदा भी किया। इसमें 1000/– रूपये दान में मिला। एक जन ने बड़ी खुशी से धर्म सम्बन्धियों को मिठाई खिलाई। श्री गुलशन भाटिया जी द्वारा 500/– रूपये अखबार चन्दा प्राप्त हुआ।

पदमपुर, 29 – 11 – 2018 को शाम को श्रीमान बलदेव सिंह जी के साथ श्रीमान मेहर सिंह जी, श्रीमान जागीर सिंह जी श्रीमान दिवान जी पदमपुर पहुँचे व रात्रि करीब आठ बजे एक सभा की गई। यहाँ कुल 4 सभाएँ करायी गई। डा० मुंशा सिंह जी काफी खराब सेहत के बावजूद भी भाग दौड़ करके संग्राम करते रहे। सभापति जी ने धर्म सम्बन्धियों के महोत्सव पर पहुँचने की प्रेरणा की। यहाँ से कुल 2050/– रूपये का दान मिला

भटिण्डा/गोनियाणा मण्डी, 1.12.2018 को पदमपुर में सुबह की सभा के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी व गोपाल जी श्री गंगा नगर से भटिण्डा गये वहाँ श्रीमान जी ने देव समाज साधन मन्दिर में बीबी ज्ञानवती जी की बिमारी का हाल चाल पता किया फिर इससे आगे श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के गृह में उनसे मिले व उनकी धर्मपत्नि की खराब सेहत के बारे में पता किया। इसके बाद शाम को गोनियाणा मण्डी पहुँचे जहाँ पर श्री सुखदेव जी के घर रात्रि एक सभा की गई व धर्म सम्बन्धियों को सह – परिवार महोत्सव पर पहुँचने का निमन्त्रण दिया गया। धर्म सम्बन्धियों ने उत्साह दिखाया व 300/– रूपये दान भी दिया।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पाठ और विचार विषयक वार्षिक सोलह साधनों की तालिका सन 2019 ई०

24 जनवरी वीरवार	माता पिता और सन्तान दिवस
10 फरवरी रविवार	भाई बहनों के सम्बन्ध में दिवस
28 फरवरी, 1,2 वीवार, शुक्रवार, शनिवार	देव समाज का उत्सव
21 मार्च वीरवार	पति पत्नी दिवस
06 अप्रैल शनिवार	वनस्पति जगत दिवस
20 अप्रैल शनिवार	नौकर मालिक दिवस
17 मई शुक्रवार	स्वंशीय जनों के सम्बन्ध में
13 जून वीरवार	स्वदेश के सम्बन्ध में
15, 16, 17 जुलाई सोमवार, मंगलवार, बुधवार	साथी सेवकों के सम्बन्ध में
13, 14, 15 अगस्त मंगलवार, बुधवार, वीरवार	स्वास्तित्व के सम्बन्ध में
6 सितम्बर शुक्रवार	पशु जगत के सम्बन्ध में
28 सितम्बर शनिवार	परलोक के सम्बन्ध में
08 अक्तूबर मंगलवार	स्वजाति के सम्बन्ध में
27 अक्तूबर रविवार	भौतिक जगत के सम्बन्ध में
12 नवम्बर मंगलवार	मनुष्य मात्रा के सम्बन्ध में
11, 12, 13, 14 दिसम्बर, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, शनिवार	परम पूजनीय भगवान देवात्मा के जन्म दिन के सम्बन्ध में महा उत्सव
13 दिसम्बर शुक्रवार	विशेष दिन

शोक समाचार

बहुत शोक कि हमारे प्यारे साथी श्रीमान एस. एन. मदान साहिब, रिटायरड डारैक्टर इंजनियरिंग विभाग चण्डीगढ़ का 7 जनवरी को देहान्त हो गया है। हम उनकी आत्मा की शान्ति और परिवार के धैर्य के लिए कामना करते हैं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts